CAAE – 1 (H)

सहायक लेखा अधिकारी सामूहिक परीक्षा, 2010

फरवरी, 2011

सार लेखन, मसौदा और व्याकरण

समय : 3 घंटे — *अधिकतम अंक : 100*

टिप्पणीः इस प्रशन पत्र में **4** पृष्ठ और **7** प्रश्न हैं।

1. निम्नलिखित अनुच्छेद का सार लिखिए और उसे उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

भारत सूचना प्रौद्योगिकी और जैव प्रौद्योगिकी जैसे उच्च तकनीकी उद्योगों के बल पर आर्थिक सफलता और आधुनिकीकरण की ओर तेजी से आगे बढ़ रहा है ताकि राष्ट्र को समृद्ध बनाया जा सके। भारत के मुख्य प्रतियोगी - विशेष रूप से चीन परंतु सिंगापुर, ताइवान और दक्षिण कोरिया भी - बड़ी और विभिन्न उच्चतर शिक्षा प्रणालियों में निवेश कर रहे हैं। वे शैक्षिक प्रणाली के सबसे निचले स्तर पर बड़ी संख्या में छात्रों को पहुंच उपलब्ध करा रहे हैं जबकि इसके साथ ही वे अनुसंधान आधारित कुछ ऐसे विश्वविद्यालयों का निर्माण कर रहे हैं जो विश्व की उत्कृष्ट संस्थाओं के साथ मुकाबला करने में सक्षम हों। ये देश भावी युग की ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्थाओं का नेतृत्व करने के लिए स्वयं को तैयार कर रहे हैं।

एक समय था जब देश आर्थिक सफलता को सस्ती मजदूरी और निम्नस्तरीय तकनीकी विनिर्माण के बल पर प्राप्त कर सकते थे। कम मजदूरी से अभी भी सहायता मिलती है, परंतु बड़े स्तर पर समकालीन विकास के लिए अत्याधुनिक और कम से कम आंशिक रूप से ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था की आवश्यकता होती है। भारत ने उस मार्ग का चयन किया है परंतु इसे अपनी विश्वविद्यालय प्रणाली में बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा।

भारत को 21वीं सदी की ज्ञान की दौड़ के मामले में महत्वपूर्ण अनुकूल परिस्थिति प्राप्त है। भारत के पास बड़ा उच्चतर शिक्षा क्षेत्र है - छात्रों की संख्या के मामले में चीन और अमरीका के बाद तीसरा सबसे बड़ा। यह अंग्रेजी का उपयोग उच्चतर शिक्षा और अनुसंधान की मुख्य भाषा के रूप में करता है और इसकी लम्बी शैक्षिक परम्परा रही है। यहां छोटी संख्या में उच्च गुणता वाली संस्थाएं, विभाग और केंद्र मौजूद हैं जो उच्चतर शिक्षा के मामले में गुणता के क्षेत्र का आधार बन सकते हैं। यह तथ्य कि केंद्रीय सरकार के बजाय राज्य उच्चतर शिक्षा के लिए बड़ा दायित्व वहन करते हैं, दुर्वहनीय ढ़ांचा खड़ा करते हैं, परंतु व्यवस्था विभिन्न नीतियों और प्रवृत्तियों की अनुमति देती है।

परंतु मजबूती की अपेक्षा कमजोरियां अधिक हैं। भारत अपने युवाओं में से लगभग 10% को उच्चतर शिक्षा में शिक्षित करता है जबकि यह प्रतिशत बड़े औद्योगिक देशों में पचास से अधिक और चीन में 15% है। विश्व की लगभग सभी शैक्षिक प्रणालियां पिरामिड जैसी हैं, जिनमें छोटा उच्च

गुणता का स्तर शिखर पर और बड़ा क्षेत्र सबसे नीचे। भारत में शिखर स्तर बहुत छोटा है। इसका कोई भी विश्वविद्यालय शिखर की ठोस स्थिति धारण नहीं करता। इने-गिने उत्तम विश्वविद्यालयों में कुछ उत्कृष्ट विभाग और केंद्र हैं और थोड़ी संख्या में श्रेष्ठ स्नातकपूर्व कालेज हैं। वर्तमान में, विश्वस्तर की संस्थाओं में मुख्य रूप में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी), भारतीय प्रबंधन संस्थान (आईआईएम) ही हैं और भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान एवं टाटा मूलभूत अनुसंधान संस्थान आदि जैसे शायत कुछ अन्य संस्थानों की अच्छी प्रतिष्ठा है।

भारत के कालेज और विश्वविद्यालय कुछ अपवादों को छोड़कर, बड़ी, अल्प वित्तपोषित, शासित न की जाने योग्य संस्थाएं बन गई हैं। इनमें से बहुतों में कैम्पस जीवन में राजनीति प्रवेश कर गई है जो शैक्षिक नियुक्तियों और हर स्तर पर निर्णय लेने को प्रभावित कर रही है। पुस्तकालयों, सूचना प्रौद्योगिकी, प्रयोगशालाओं और कक्षा कक्षों में अल्प निवेश के परिणामस्वरूप उत्कृष्ट अनुदेश देना या निर्णायक अनुसंधान में लगाना अत्यंत कठिन हो गया है।

कई स्थानों पर अंशकालिक अध्यापकों की संख्या में वृद्धि होने और नई पूर्णकालिक नियुक्तियां न होने के परिणामस्वरूप शैक्षिक व्यवसाय में मनोबल को प्रभावित किया है। जिम्मेदारी न होने का अर्थ है कि शैक्षिक और अनुसंधान कार्य निष्पादन शायत ही कभी मापे जाते हैं। व्यवस्था कार्य करने के लिए बहुत कम प्रोत्साहन देती है। नौकरशाही जड़ता परिवर्तन में रुकावट डालती है। छात्र असंतुष्टि और प्राध्यापकों का कभी कभार प्रदर्शन प्रचालन में बाधा उत्पन्न करता है। फिर भी, सामान्य स्थिति का ढोंग करते हुए संकाय प्रशासक शिक्षा देते, परीक्षाओं का समन्वय करते और डिग्रियां प्रदान करते रहते हैं।

उच्चतर शिक्षा का छोटा शीर्ष-स्तर भी गंभीर कठिनाइयों का सामना करता है। कई आईआईटी स्नातकों जोकि प्रौद्योगिकी में सुप्रशिक्षित हैं, ने भारत में भरे पूरे प्रौद्योगिकी क्षेत्र में अपने कौशल का योगदान न देने का निर्णय लिया है। संभवतः स्नातक बनने पर लगभग आधे छात्र तत्काल विदेश में उच्च अध्ययन करने के लिए देश छोड़ देते हैं और उनमें से अधिकांश वापस नहीं लौटते। संयुक्त राज्य में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में डिग्री प्राप्त करने वाले भारत के 86 प्रतिशत छात्र अपने अध्ययन के बाद तत्काल घर वापस नहीं लौटते जोकि चौंका देने वाली स्थिति है। 30 प्रतिशत का अन्य महत्वपूर्ण समूह स्थानीय वेतन अधिक होने के कारण भारत में एमबीए अर्जित करने का निर्णय लेता है और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी को छोड़ देता है। समर्पित और योग्य प्राध्यापकों का एक समूह आईआईटी और आईआईएम में कार्य करता है परन्तु विदेश और निजी क्षेत्र में नौकरियों के आकर्षण के परिणामस्वरूप उत्तम और योग्यतम प्राध्यापकों को शैक्षिक व्यवसाय में आकर्षित करना और कठिन हो गया है।

भारत में बहुत कम लोग उच्चतर शिक्षा के बारे में सर्जनात्मक रूप से सोच रहे हैं। शैक्षिक संस्थाएं और प्रणालियां विशाल और जटिल हो गई हैं। उन्हें अच्छे आंकड़ों, सुविचारित विश्लेषण और सर्जनकारी विचारों की आवश्यकता है। चीन में, दो दर्जन से भी अधिक उच्चतर शिक्षा के अनुसंधान केंद्र और कई सरकारी एजेंसियां उच्चतर शिक्षा नीति में शामिल हैं।

भारत में दशकों से विस्तृत होती मध्यमस्तरीय उच्चतर शिक्षा प्रणाली चल रही है। अब भारत वैश्विक अर्थव्यवस्था में ऐसे क्षेत्रों में स्पर्धा के लिए संघर्ष कर रहा है जिनमें अत्यधिक प्रशिक्षित व्यवसायिकों की आवश्यकता है इसलिए उच्चतर शिक्षा की गुणता और अधिक

महत्वपूर्ण होती जा रही है। अब तक, भारत के बड़े शिक्षित जनसंख्या आधार और इसके कम से कम मध्यस्तरीय सुप्रशिक्षित विश्वविद्यालयी स्नातकों के समूह के बल पर देश आगे बड़ा है। परन्तु स्पर्धा ने प्रबल रूप धारण कर लिया है। चीन विशेष रूप से आगामी दशक में विश्वविद्यालयों के एक छोटे समूह को विश्व श्रेणी का बनाने के उद्देश्य से अपने सर्वोत्तम विश्वविद्यालयों को बेहतर बनाने और बड़ी संख्या में अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगी अनुसंधान विश्वविद्यालय बनाने के लिए भारी निवेश कर रहा है। अन्य एशियाई देश भी विश्व श्रेणी के विश्वविद्यालय बनाने के उद्देश्य से उच्चतर शिक्षा को उन्नत बना रहे हैं।

21वीं सदी की ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था में सफलतापूर्वक स्पर्धा करने के लिए, भारत को ऐसे पर्याप्त विश्वविद्यालयों की आवश्यकता है जो न केवल बाहर भेजे जाने के लिए होनहार स्नातक तैयार करें बल्कि विभिन्न वैज्ञानिक और विद्वत्तापूर्ण क्षेत्रों में अत्याधुनिक अनुसंधान में भी सहायता प्रदान कर सकें तथा विस्तृत होती अर्थव्यवस्था के लिए कुछ ज्ञान और प्रौद्योगिकी की आवश्यकता के स्नातक तैयार कर सके। भारत किस प्रकार उच्चतर शिक्षा की ऐसी प्रणाली निर्मित कर सकता है जो इसे विकसित अर्थव्यवस्थाओं से जोड़ने में सक्षम बना सके? उच्चतर शिक्षा के क्षेत्र में नया उभरता निजी क्षेत्र शैक्षिक वृद्धि का नेतृत्व नहीं कर सकता। अनेक सुसम्पन्न और प्रभावी प्रबंधन वाले निजी संस्थानों ने तर्कसंगत उच्च स्तर बना रखा है, तथापि यह स्पष्ट नहीं है कि ये संस्थाएं लम्बे समय तक अपना अस्तित्व बनाए रखने में सक्षम होंगी। ये संस्थाएं प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में सुयोग्य स्नातक तैयार करने में सहायता कर सकती हैं, परन्तु ये व्यापक अनुसंधान वाले विश्वविद्यालयों का आधार नहीं बन सकतीं। इस क्षेत्र के पास विज्ञान विषयों में गुणतायुक्त अनुदेश और अनुसंधान के लिए अपेक्षित सुविधाएं निर्मित करने के संसाधन उपलब्ध नहीं हैं। न ही मुख्यधारा के कला और विज्ञान विषयों में अनुदेश देकर पर्याप्त धन अर्जित किया जा सकता। अधिकांश निजी संस्थाएं विज्ञान विषयों में उन्नत प्रशिक्षण पर ध्यान केंद्रित नहीं करतीं।

भारत रातों-रात अंतर्राष्ट्रीय मान्यताप्राप्त अनुसंधान-उन्मुख विश्वविद्यालयों को तैयार नहीं कर सकता, परन्तु इस देश के पास इस प्रक्रिया को शुरु करने और बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण घटक मौजूद हैं। हमें यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि जो और विश्वविद्यालय अब स्थापित किए जा रहे हैं वे नई विश्व अर्थव्यवस्था में पूर्णतः शामिल होने के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मुकाबला कर सकें। इन सक्षम विश्वविद्यालयों के बिना भारत का वैज्ञानिक क्षेत्र में पिछड़ा रहना निश्चित है। (1274 शब्द) *(40 अंक)*

2. सचिव (उच्चतर शिक्षा) की ओर से राज्य सरकारों के शिक्षा सचिवों को भेजे जाने वाले अर्ध-सरकारी पत्र का प्रारूप तैयार कीजिए जिसमें विश्वविद्यालयों में उच्चतर शिक्षा की गुणता में सुधार के लिए राज्य सरकार द्वारा किए गए विभिन्न उपायों पर उनकी टिप्पणियां और साथ ही भारतीय विश्वविद्यालयों को वैश्विक रूप से सक्षम बनाने के लिए उनके सुझाव मांगे गए हों। *(25 अंक)*

3. निम्नलिखित का हिन्दी में अनुवाद कीजिए।

The call to merge the Railway Budget with the General Budget is justified. The Indian example of a separate railway budget has no parallel elsewhere. Railways

is just another infrastructure Ministry and must be treated as such. Railway finances are shown in the General Budget and there is no case to continue with a British era tradition that had its own logic then.

The practice of a separate Railway Budget dates back to 1924, when 70% of total government expenditure was meant for the Railways. Since then, the Indian economy has diversified and budgetary priorities have shifted. So, why is Railways treated in a special category? Clearly, it is not for economic or administrative reasons. The Railways is perceived by politicians as an entity useful to dispense patronage and further their political career. The Ministry is among the world's largest employers and the Minister is seen as someone able to provide jobs. The Railway Budget speech provides a great stage for the Minister to address his constituents directly. Populist announcements, often with an eye on impending elections, most often characterize the Railway Minister's budget speech. *(10 अंक)*

4. निम्नलिखित शब्दों में से **किन्हीं पांच** के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए। *(5 अंक)*

1. अमृत
2. प्रकाश
3. वायु
4. कमल
5. सिंह
6. लक्ष्मी
7. देवता

5. निम्नलिखित वाक्यों/वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखें। *(5 अंक)*

1. वर्ष में एक बार होने वाला।
2. आलोचना करने वाला।
3. जिसका वर्णन न किया जा सके।
4. जिसका मूल्य बहुत अधिक हो।
5. पन्द्रह दिन में एक बार होने वाला।

6. निम्नलिखित मुहावरों में **किन्हीं पांच** का अर्थ स्पष्ट करते हुए वाक्यों में प्रयोग करें। *(10 अंक)*

1. नाक ऊँची रखना।
2. दाँत खट्टे करना।
3. गर्दन पर छुरी फेरना।
4. नाक में दम करना।
5. खटाई में पड़ना।
6. हाथों के तोते उड़ना।
7. सिर पर भूत सवार होना।

7. निम्नलिखित शब्दों में से **किन्ही पांच** शब्दों के विलोम शब्द लिखें: *(5 अंक)*

1. उत्कर्ष
2. जटिल
3. अनाथ
4. साक्षर
5. अंधकार
6. आवरण
7. सुपुत्र

CAAE – 1 (E)

COMMON ASSISTANT ACCOUNTS OFFICER EXAMINATION, 2010

FEBRUARY, 2011

PRECIS, DRAFT AND GRAMMAR

Time Allowed : 3 Hours *Maximum Marks : 100*

Note : This question paper contains **4** pages and has **6** questions.

1. Make a précis of the following passage and give an appropriate title. *(40 marks)*

India is heading headlong towards economic success and modernization, counting on high-tech industries such as information technology and biotechnology to propel the nation to prosperity. India's main competitors - especially China but also Singapore, Taiwan and South Korea - are investing in large and differentiated higher education systems. They are providing access to large number of students at the bottom of the academic system while at the same time building some research based Universities that are able to compete with the world's best Institutions. These countries are positioning themselves for leadership in the knowledge-based economies of the coming era.

There was a time when countries could achieve economic success with cheap labour and low-tech manufacturing. Low wages still help, but contemporary large-scale development requires a sophisticated and at least partly knowledge-based economy. India has chosen that path, but will find a major stumbling block in its university system.

India has significant advantages in the 21st century knowledge race. It has a large higher education sector - the third largest in the world in student numbers, after China and the United States. It uses English as a primary language of higher education and research and has a long academic tradition. There are a small number of high quality Institutions, Departments, and Centres that can form the basis of quality sector in higher education. The fact that the States, rather than the Central Government, exercise major responsibility for higher education creates a rather cumbersome structure, but the system allows for a variety of policies and approaches.

Yet the weaknesses far outweigh the strengths. India educates approximately 10 per cent of its young people in higher education compared with more than half in the major industrialized countries and 15 per cent in China. Almost all of the world's academic systems resemble a pyramid, with a small high quality tier at the top and massive sector at the bottom. India has a tiny top tier. None of its Universities occupies a solid position at the top. A few of the best Universities have some excellent Departments and Centres, and there is a small number of outstanding Undergraduate Colleges. At present, the world-class Institutions are mainly limited to the Indian Institutes of Technology (IITs), the Indian Institutes of Management (IIMs) and perhaps a few others such as the All India Institute of Medical Sciences and the Tata Institute of Fundamental Research etc have good reputation.

India's Colleges and Universitites, with just a few exceptions, have become large, under-funded, ungovernable institutions. At many of them, politics has intruded into campus life, influencing academic appointments and decisions across levels. Under-investment in libraries, information technology, laboratories and classrooms makes it very difficult to provide top-quality instruction or engage in cutting-edge research.

The rise in the number of part-time teachers and the freeze on new full-time appointments in many places has affected morale in the academic profession. The lack of accountability means that teaching and research performance is seldom measured. The system provides few incentives to perform. Bureaucratic inertia hampers change. Student unrest and occasional faculty agitation disrupt operations. Nevertheless, with a semblance of normality, faculty administrators are able to provide teaching, coordinate examinations and award degrees.

Even the small top tier of higher education faces serious problems. Many IIT graduates, well trained in technology, have chosen not to contribute their skills to the burgeoning technology sector in India. Perhaps half leave the country immediately upon graduation to pursue advanced study abroad – and most do not return. A stunning 86 per cent of students in science and technology fields from India who obtain degrees in the United States do not return home immediately following their study. Another significant group, of about 30 per cent, decides to earn MBAs in India because local salaries are higher – and are lost to science and technology. A corps of dedicated and able teachers work at the IITs and IIMs, but the lure of jobs abroad and in the private sector make it increasingly difficult to lure the best and brightest to the academic profession.

Few in India are thinking creatively about higher education. Academic Institutions and systems have become large and complex. They need good data, careful analysis and creative ideas. In China, more than two-dozen higher education research Centres and several Government Agencies are involved in higher education policy.

India has survived with an increasingly mediocre higher education system for decades. Now as India strives to compete in a global economy in areas that require highly trained professionals, the quality of higher education becomes increasingly important. So far, India's large educated population base and its reservoir of atleast moderately well-trained university graduates have permitted the country to move ahead. But the competition is fierce. China in particular is heavily investing in improving its best universities with the aim of making a small group of them world class in the coming decade and making a larger number internationally competitive Research Universitities. Other Asian countries are also upgrading higher education with the aim of building world-class universities.

To compete successfully in the knowledge-based economy of the 21st century, India needs enough universities that not only produce bright graduates for export but can also support sophisticated research in a number of scientific and scholarly fields and produce at least some of the knowledge and technology needed for an expanding economy. How can India build a higher education system that will permit it to join developed economies? The newly emerging private sector in higher education cannot spearhead academic growth. Several of the well-endowed and effectively managed private institutions maintain reasonably high standards, although it is not clear that these institutions will be able to sustain themselves in the long run. They can help produce well-qualified graduates in such fields as management, but they cannot form the basis for comprehensive research universities. This sector lacks the resources to build the facilities required for quality instruction and research in the sciences. Nor can enough money be earned by providing instruction in the mainstream arts and sciences disciplines. Most of the private institutions do not focus on advanced training in the sciences.

India cannot build internationally recognized research-oriented universities overnight, but the country has the key elements in place to begin and sustain the process. We need to ensure that more Universities that are being established can compete internationally to fully participate in the new world economy. Without these competent Universities, India is destined to remain a scientific backwater. (1067 words)

2. Draft a D.O. letter from Secretary (Higher Education) to the Education Secretaries of the State Governments asking their comments on various steps taken by the State Government to improve the quality of higher education in Universities and also their suggestions to make Indian Universities globally competent. *(25 marks)*

3. Fill in the blanks with suitable prepositions. *(5 marks)*

(a) He wore a turban made ..... silk.
(b) A grassy meadow stretched ..... us.
(c) Nobody likes a person ..... a bad temper.
(d) They sat for a while ..... the river bank.
(e) He could not attend school ..... his father's serious illness.

4. Write meaning and make sentences using the following words-**Any five**. *(10 marks)*

(a) Connivance
(b) Probe
(c) Alumnus
(d) Opinion
(e) Exception
(f) To fret over
(g) Breakthrough

5. Fill in the blanks with the correct tense of the verb given in bracket. *(10 marks)*

(a) Everybody ..... to enjoy life. (Wish)
(b) I must ..... it out clearly. (Speak)
(c) The Rajah ..... no cows to be slaughtered in his territory. (Allow)
(d) The robber ..... out a knife and frightened the old man. (Take)
(e) This is the house that Jack ..... (Build)
(f) When I was a bachelor, I ..... by myself. (Live)
(g) Rama asked Hari if he would ..... places with him. (Change)
(h) Abdul said that he had ..... that picture. (See)
(i) Since that is the case, I shall ..... you. (Excuse)
(j) They..... with the morning lark, and labour till almost dark. (Rise)

6. Fill in the blanks with appropriate conjunctions. *(10 marks)*

a. I waited for my friend ..... he came.
b. Answer the first question ..... you proceed further.
c. He found his watch ..... he had left it.
d. ..... you wish it, it shall be done.
e. Grievances can not be redressed ..... they are known.
f. He was all right; ..... he was fatigued.
g. ..... you tell me the truth, I shall punish you.
h. Walk quickly, ... you will not overtake him.
i. He fled ..... he should be killed.
j. You will get the prize ..... you deserve it.